भूमिका

यह एक सर्वविदित सत्य है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। शिक्षा का संबंध सिर्फ साक्षरता से नहीं है बल्कि शिक्षा चेतना और उत्तरदायित्व की भावना को जागृत करने का औज़ार है। शिक्षा को एक मापक या पैमाने के तौर पर देखा जा सकता है जिसके आधार पर व्यक्ति, राज्य या देश का मूल्यांकन किया जा सकता है। भारत में शिक्षा की सुव्यवस्थित प्राचीन परम्परा थी। अंग्रेजी राज के पहले यहां लाखों स्कूल थे या फिर कहिए कि हर गाँव में स्कूल था। गांधी जी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक साधन समझते थे। वे इसे शांत सामाजिक क्रांति का एक प्रमुख आधार मानते थे। वे शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार कहते थे। उनके अनुसार- शिक्षा व्यक्ति को स्वंय के विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी प्रेरित करती है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है।

शिक्षा के अनेक आयाम हैं, जो राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हैं। शिक्षा मनुष्य का एक महत्वपूर्ण संस्कार है, जिसे हम जीवन की तैयारी कह सकते हैं, इसकी भूमिका में राष्ट्र की शिक्षा नीति निहित रहती है। उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है।

गांधी जी शिक्षा के व्यवसायिक और निजीकरण व्यवस्था को समझना चाहते थे कि शिक्षा के व्यवसायिकरण ने आज इसके उद्देश्य को ही बदल कर रख दिया है जिसके परिणाम स्वरूप आज शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य अच्छा इंसान बनाना नहीं बल्कि अच्छा वेतन पाना मात्र रह गया है। आज के समय में आर्थिक संस्थाएं अपने आर्थिक हित के लिए अनेकों अनेक शिक्षण संस्थाएं खोल रही , हैं यही कारण है कि आज शिक्षा में मूल्यों की बात केवल कहने भर रह गई है। मानवीय मूल्य मानो खत्म हो चुके हैं। सामाजिक न्याय जैसे शब्द सजावट के शब्द बन गए हैं जिसका पौराणिक

शिक्षा से कोई नाता नहीं है। इसलिए आज की शिक्षा एक कुशल डाक्टर, इंजीनियर, प्रबन्धक या प्रशासक को तैयार कर रही है पर उसे एक संवेदनशील इंसान नहीं बना रही है।

आज आज़ादी के इतने साल बाद भी हम "सब पढ़ें सब बढ़ें" को किस स्तर तक सफल बना पाये यह निश्चित तौर पर विचारणीय है। पर क्या आज के समय में गांधी जी के ये विचार अमल में लाये जा रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर जानना नितांत आवश्यक है और यह भी जानना महत्वपूर्ण है कि हर व्यक्ति के जीवन में शिक्षा अवश्यक है या नहीं ?

महात्मा गांधी जो एक महान दार्शनिक, राजनीतिक, समाज सुधारक के साथ ही साथ एक महान शिक्षाविद् भी थे, और उन्हें बुनियादी शिक्षा का जनक भी कहा जाता है। लेकिन गांधी जी ने उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के संबंध में जो भी अपने विचार दिए हैं, वो आज भी प्रासंगिक है। आज उच्च शिक्षा ग्रहण करने बाद भी लोग बेरोजगार घूम रहे हैं। इन सब समस्याओं को देखते हुये यह लघु शोध कार्य किया गया है। जिसमें गांधी जी के उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा पर कार्य किया गया है। इस लघु कार्य को चार अध्याय में विभक्त किया गया है ,

प्रथम अध्याय – इस अध्याय में शिक्षा का इतिहास और गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचारों को एकत्रित किया गया है। गांधी जी के शिक्षा के तीनों प्रारूपों पर जिसमें प्राथमिक शिक्षा , उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के विषय में विस्तार से व्याख्या किया गया है।

द्वितीय अध्याय – इस अध्याय के अंतर्गत गांधी जी के उच्च शिक्षा संबंधी विचारों को विस्तार पूर्वक व्याख्या किया गया है। जिसमें उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके विद्यार्थी जो बेरोजगार घूम रहे हैं उनके लिए सुझाव और जो उच्च शिक्षा नहीं ग्रहण कर पाए उनके विषय में गांधी जी ने जो सुझाव दिया है , इस अध्याय के अंतर्गत रखा गया है।

तृतीय अध्याय – इस अध्याय के अंतर्गत प्रौढ़ शिक्षा को रखा गया है। जिसमें गांधी जी ने बताया है कि एक प्रौढ़ या अनपढ़ व्यक्ति के जीवन में शिक्षा कितना महत्वपूर्ण है। जिसमें किसान मजदूर अन्य

प्रौढ़ भी आते हैं , जो कि अपने खाने का हर प्रकार से इंतजाम कर सकते , लेकिन उनके जीवन में शिक्षा का फिर भी कितना महत्व है इन सब बातों का इस अध्याय में विस्तार से व्याख्या किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय – इस अध्याय के अंतर्गत गांधी जी के उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा की प्रासंगिकता के साथ-साथ उसको व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझा गया है कि इन दोनों प्रारूपों में शिक्षा की स्थिति हमारे देश में कहाँ तक प्रासंगिक है। इन सब बातों को लेकर विस्तार से व्याख्या किया गया है।

अतः शिक्षा के आधारभूत सुदृढ़ संरचना को गांधी जी ने जिस प्रकार से निर्मित किया और उस पर जो विचार व्यक्त किए उसका योजनाबद्ध तरीके से अध्ययन करने के पश्चात यह अंततः यह कहा जा सकता है कि समाज के प्रगति शिक्षा का व्यवसायिकरण करने के साथ-साथ व्यावहारिकता, मानवता, देश प्रेम द्वारा उसे सबके हितों तक पहुंचाना चाहिए, जिसमें केंद्र और राज्य सरकारों का योगदान भी महत्वपूर्ण है। शिक्षा का रूप बुनियादी हो या उच्च हो या प्रौढ़ हो सबको एकसूत्रीय योजना में जोड़कर व्यावहारिक और उद्देश्यपूर्ण नीतियों से लागू करना चाहिए, जिससे देश और समाज की प्रगति उन नीतियों के अनुरूप हो।

दिनांक :

स्थान : **वर्धा**

मनीष मिश्र
एम॰फिल॰ (2014/03/210/002)
अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग
म॰गां॰अं॰हि॰वि॰, वर्धा, महाराष्ट्र